

পাট ও সমবর্গীয় তন্তু ফসল চাষীদের জন্য কৃষি পরামর্শ

প্রকাশনা

ভা.কৃ.অনু.প- ক্রিজাফ, ব্যারাকপুর

৯-২৩ এপ্রিল, ২০২২ (সংস্করণ সংখ্যাঃ ০৭/২০২২)



ভা.কৃ.অ.প. -কেন্দ্রীয় পটসন এবং সমবর্গীয় রেশা অনুসন্ধান সংস্থান
ICAR-Central Research Institute for Jute and Allied Fibers

An ISO 9001: 2015 Certified Institute

Barrackpore, Kolkata-700120, West Bengal

www.icar.crijaf.gov.in



पाट ओ सहयोगी फसल उतुपादनकारी चाषिदेर जन्य कृषि-परामर्श
९-२३ एप्रिल, २०२२

I. पाट उतुपादनकारी राज्यातुलर एह समयेर सतुभाव्य आबहाओयार पररसुतुतु

राज्य/ कृषि-जलवायु अतुणल/ जेला	आबहाओयार पूरुवातुस
गाङ्गेय पश्चरुमबङ्ग मुर्शरुदाबाद, नदरुया, हुगली, हाओडा, उतुतर २४ परगना, पूरुव बरुधमान, पश्चरुम बरुधमान, दक्षरुण २४ परगना, बाँकुडा, बीरतुम	आगामी ९-१२ एप्ररुल वृषुतरु सतुभावना नेह। सरुवोऑ तापमातुरा ३ॡ-३१ डरुग्ररु एबं सरुवनरुन तापमातुरा २ॡ-२१ डरुग्ररु सेनुतरुग्रेडेरु मतुओ थारुकेवे।
हरुमालय सनुनरुहतरु पश्चरुमबङ्ग दरुजरुलरुण, कोाऑबरुहार, आलरुपुरदुयार, जलपाहणुडरु, उतुतरु दरुनरुजपुर, दक्षरुण दरुनरुजपुर, मरुलदरु	आगामी ९-१२ एप्ररुल वृषुतरु सतुभावना आऑे (मूओत वृषुतरु पररुमरुन १ॡ मरुलरुमरुतरु परुयतुतु)। एह अतुणले सरुवोऑ तापमातुरा २ॢ-२९ डरुग्ररु एबं सरुवनरुन तापमातुरा २०-२३ डरुग्ररु सेनुतरुग्रेडेरु मतुओ थारुकेवे।
आसामः मधुय बरुन्रुपतुरु उतुपतरुका ऑेऑरु मरुरुगणुओ, नओगणुओ	आगामी ९-१२ एप्ररुल वृषुतरु सतुभावना आऑे (मूओत वृषुतरु पररुमरुन ३ॡ मरुलरुमरुतरु परुयतुतु)। सरुवोऑ तापमातुरा २ॢ-२ऑ डरुग्ररु एबं सरुवनरुन तापमातुरा २०-२२ डरुग्ररु सेनुतरुग्रेडेरु मतुओ थारुकेवे।
आसामः नरुन्रु बरुन्रुपतुरु उतुपतरुका ऑेऑरु गूयूालपाडा, धुवडरु, कोकडरुबाड, बङ्गहणुओ, वरुपेतरु, नलबाडरु, कारुमरुण, बाऑू, ऑररुऑ	आगामी ९-१२ एप्ररुल वृषुतरु सतुभावना आऑे (मूओत वृषुतरु पररुमरुन १० मरुलरुमरुतरु परुयतुतु)। सरुवोऑ तापमातुरा २ॢ-२ऑ डरुग्ररु एबं सरुवनरुन तापमातुरा २०-२२ डरुग्ररु सेनुतरुग्रेडेरु मतुओ थारुकेवे।
बरुहारः कृषि-जलवायु अतुणल २ (उतुतरु-पूरुव अतुणल) पूरुणरुया, कारुतरुहार, सहरुष, सुपूील, मरुधेपूरा, खरुगरुणरुया, आरुणरुणरुया, कषणणगऑ	आगामी ९-१२ एप्ररुल वृषुतरु सतुभावना आऑे (मूओत वृषुतरु पररुमरुन १० मरुलरुमरुतरु परुयतुतु)। सरुवोऑ तापमातुरा ३ॡ-३१ डरुग्ररु एबं सरुवनरुन तापमातुरा २२-२३ डरुग्ररु सेनुतरुग्रेडेरु मतुओ थारुकेवे।
उडरुषुयाः उतुतरु-पूरुव तूतरुय सतुतुतु वालेशुवरु, तदुकरु, जरुजपुर	आगामी ९-१२ एप्ररुल वृषुतरु सतुभावना नेह। सरुवोऑ तापमातुरा ३ॢ-३९ डरुग्ररु एबं सरुवनरुन तापमातुरा २४-२ॢ डरुग्ररु सेनुतरुग्रेडेरु मतुओ थारुकेवे।
उडरुषुयाः उतुतरु-पूरुव ओ दक्षरुण-पूरुव सतुतुल अतुणल केऑरुपाडा, खुर्दरु, जरुगऑसरुणहपुर, पूरुी, नरुयागड, कऑक (आंशरुक) एबं गऑूम (आंशरुक)	आगामी ९-१२ एप्ररुल वृषुतरु सतुभावना नेह। सरुवोऑ तापमातुरा ३ॡ-३१ डरुग्ररु एबं सरुवनरुन तापमातुरा २ॡ-२१ डरुग्ररु सेनुतरुग्रेडेरु मतुओ थारुकेवे।

तथुय सुतुरुः डरुभरुतरुय आबहाओया बरुतुवण (http://mausam.imd.gov.in एबं www.weather.com)

II. पाट फसलेर जन्य कृषि परामर्श

१। ये चाषिरा एखनो पाट लागाननि

- जमि तैरी सम्पूर्ण करे, ताडाताड़ि पाट बीज लागते हवे। पाटेर भालो फलन ओ उन्नत गुनमानेर तन्तु पाओयार जन्य जे.आर.ओ २०४ (सुरेन) जातेर पाट बीज व्यवहार करते हवे। पाट बीज लागानोर चार घन्टा आगे प्रति किलो बीजेर जन्य २ ग्राम हिसाबे कार्बेन्डाजिम (व्याभिस्टिन) ५० डब्लू.पि दिये बीज शोधन करते हवे। यदि जे.आर.ओ २०४ (सुरेन) जातेर पाट बीज ना पाओया यार, तबे जे.आर.ओ ५२४, इरा, तरुण, एन.जे १०१० जातेर बीज लागानो येते पारे। कचि अवस्थाय पाट शाक हिसाबे व्यवहारेर जन्य ओ एहि जातगुलि लागानो याबे।
- आई.सि.ए.आर-क्रिजाफ पाट बीज वपन यन्त्र व्यवहार करे सारिते पाट बीज लागते हवे। एहि मेशिने पाट बीज वुनते विषा प्रति (०.१३० हेक्टेर) मात्र ३५०-४०० ग्राम पाट बीज लागबे। सारि थेके सारिर दूरत हवे २०-२५ सेमि एवंग बीज माटिर ३ सेमि गभीरे लागते हवे।
- यदि एकातुहि पाट बीज सारिते बोनार सीडड्रिल यन्त्र ना पाओया यार, तबे विषा प्रति ८०० ग्राम बीज व्यवहार करे छिटिये बोनो याबे; एवंग तार पर जमिर जो अवस्थाय क्रिजिजाफ नेल उईडार चालिये सारि तैरी ओ आगाछा नियन्त्रण करा याबे। बीज बोनार ५-८ दिन परे एहि नेल उईडार चालाले, शिकड़ अष्यले (०-१५ सेमि.) शतकरा ५-६ शतांश जल संरक्षण हय, माटि (०-१० सेमि.) १-३ डिग्रि सेन्टिग्रेड ठांदा राखे एवंग फले ३० दिन पर्यन्त पाटेर चारा खरा अवस्था थेके रक्षा पाय।
- जमि तैरीर समय भालोभाबे मई दिते हवे, याते जमिर माटिर उपर धूलोर आन्तरण तैरी हय, एते माटिते जल संरक्षण हवे ओ सहजे पाट बीजेर अक्षुरोक्षम हवे।
- मावारि ओ यथेष्ट उर्वर जमिर जन्य, नाइट्रोजेनः फसफेटः पटाशेर हेक्टेर प्रति सुपारिश मात्रा हल ७०ः३०ः३० किलोग्राम। यदि जमि कम उर्वर हय, तबे एहि मात्रा हवे ८०ः४०ः४० किलोग्राम प्रति हेक्टेर। नाइट्रोजेन घटित सार २ वारे चापान हिसाबे प्रयोग करते हवे। तबे फसफेट ओ पटाश सारेर सुपारिश मात्रार पुरोटाई जमि तैरीर शेषेर दिके माटिते प्रयोग करते हवे। चाषिदेर यदि माटि परीक्षार पर पाओया माटिर स्वास्थ्य कार्ड थाके, तबे सेइ कार्डे उल्लेख करा हारे सार प्रयोग करते हवे।
- सेच सेवित पाटेर जमिर आगाछा नियन्त्रणेर जन्य पाट बोनार ४८ घन्टा पर, प्रेटिलक्लोर (५० ईसि) ३ मिलिलिटर प्रति लिटर जले मिशिये माटिते स्प्रे करते हवे। यदि सेचेर सुविधा ना थाके, तबे पाट बोनार ४८ घन्टा परे, बुटाक्लोर (५० ईसि) ४ मिलिलिटर प्रति लिटर जले मिशिये प्रयोग करते हवे।
- यदि पाट बोनार ५-६ दिन पर खरार मते परिस्थिति हय, तबे छैटोनो पद्धतिते सेच दिते हवे। यदि वृष्टि संभावना थाके, तबे सेच देओयार आगे वृष्टि जन्य अपेक्षा करा येते पारे।



थाप-१ः जमि तैरी एवंग प्राथमिक सार प्रयोग



थाप-२ः बीज लागानोर चार घन्टा आगे प्रति किलो बीजे २ ग्राम कार्बेन्डाजिम दिये बीज शोधन



थाप-३ः क्रिजिजाफ पाट बीज वपन यन्त्र दिये सारिते शोधित पाट बीज लागानो।



थाप-४ः सेच सुविधा युक्त जमिते आगाछा नियन्त्रणेर जन्य प्रेटिलक्लोर ३ मिलि/ प्रति लिटर जले मिशिये प्रयोग। सेच हीन जमिते आगाछा नियन्त्रणेर जन्य बिउटाक्लोर ४ मिलि/ प्रति लिटारे दिये प्रयोग।



थाप-५ः पाट लागानोर ४-८ दिन परे क्रिजिजाफ नेल उईडार चालानो।

२। समय मतो लागानो पाट फसलेर जन्य (२५ मार्च थेके १० एप्रिल), फसलेर वयस : १५-२५ दिन

- यारा मार्चेर शेष सप्टाह थेके एप्रिलेर प्रथम सप्टाहेर मध्ये पाट लागियेछेन (फसलेर वयस ३ सप्टाह), तारा यान्त्रिक पद्धतिते क्रिजाफ नेल उईडार वा एक चाका पाट निडानि यन्त्र (सिङ्गल हईल जुट उईडार) व्यवहार करे आगाछा नियन्त्रण करबेन ओ माटिते रसेर अवस्था बुबे हालका जलसेच देबेन। चारा पातला करे प्रति बगमिटाेरे ५०-६० टि पाटेर चारा राखते हबे। आगाछा नियन्त्रण ओ चारा पातला करार पर (२१ दिन वयसे), नाइट्रोजेन घटित सार चापान हिसाबे दिते हबे। माबारी ओ यथेष्ट उर्वर जमिर जन्य २० किलो/प्रति हेक्टेरे एवंग कम उर्वर जमिर फ्लेक्टेरे २९ किलो/ प्रति हेक्टेरे सार प्रयोग करते हबे।
- सरूपता आगाछा नियन्त्रणेर जन्य, घास गजानोर पर एवंग पाट लागानोर ८-१० दिन पर, कुईजालोफप इथाईल (५ ईसि) १ मिलि/ प्रति लिटारे अथवा पाट लागानोर १५ दिन पर, कुईजालोफप इथाईल (१० ईसि) ०.९५ मिलि/ प्रति लिटार जले मिशिये स्प्रे करते हबे।
- पाटेर चारार (अक्कुरोक्कामेर पर थेके छोटो चारा अवस्थाय) गोडा केटे देओया नील ल्यादापोका वा इन्डिगो क्यारपिलारेर आक्रमण विषये चाषिदेर सतर्क करा हछे। एई पोकार आक्रमण वृष्टि पर वा जलसेच देवार पर बेशि देखा यार। एई ल्यादा पोकागुलि जमिर माटिर टेलाेर निचे, पाट गाछेर गोडाेर काछे लुकिये थाके। एदेर नियन्त्रणेर जन्य बिकेलेर दिके क्लोरपाईरिफस (२० ईसि) २ मिलि/ प्रति लिटार जले मिशिये स्प्रे करते हबे। यदि पोकार आक्रमण तार परेओ थाके, तबे प्रयोजने, ८-१० दिन पर आवार ए क्ीटनाशक एकई हारे प्रयोग करते हबे।



पाट लागानोर २१ दिन पर,
क्रिजाफ नेल उईडार वा एक
चाका पाट निडानि यन्त्रेर फला
(फ्ल्यापार) युक्त अवस्थाय व्यवहार।



नील ल्यादापोका वा इन्डिगो
क्यारपिलार नियन्त्रणेर जन्य
पाट लागानोर १५ दिन पर
क्लोरपाईरिफस (२० ईसि) २
मिलि/प्रति लिटार जले मिशिये
बिकेलेर दिके स्प्रे।
प्रयोजने ८-१० दिन पर
आवार स्प्रे।



III. अन्यान्य सहयोगी तन्त्र फसलेर कृषि परामर्श

(क) शणपाट बा सानहेम्प



१। समयमतो लागानो शणपाट फसल (एप्रिलेर माबामाबि)

- এই समये सर्वोच्च ओ सर्वनिम्न तापमात्रा यथाक्रमे ३९-४१ डिग्रि एवं २३-२४ डिग्रि हवे बले अनुमान करा हयेछे एवं सेइ सङ्गे उত্তर प्रदेशेर शणपाट अक्षले आगामी सप्ताहे अति सामान्य वृष्टि हते পারে।
- चाषिदेर जमि तैरी करे, बीज लागानोर आगे जलसेच दिये शणपाट बीज लागते परामर्श देओया हछे।
- शणपाटेर प्राक्कुर (JRJ 610), अक्कुर (SUIN 037), शैलेश (SH-4), अस्तिक (SUIN 053), एवं के-१२ (हलुद) जातेर शंसित बीज लागते हवे
- बीजवाहित रोगे थेके এই फसल बाँचाते कार्बेन्डाजिम २ ग्राम/ प्रति किलो बीजे मिशिये बीज शोधन करते हवे।
- सारि करे लागते हेक्टेर प्रति २५ किलो एवं छिटिये वुनले हेक्टेर प्रति ३५ किलो बीज लागवे। शणपाट लाइन करे लागानोर सुपारिश करा हय - एक्फ्रे सारि थेके सारिर दूरद्व हवे २५ सेमि. आर (एकई सारिते) चारा थेके चारार दूरद्व हवे ५-९ सेमि, बीज २-३ सेमि गभीरे लागते हवे।
- बीज लागानोर समय, प्राथमिक मूलसार हिसाबे नाइट्रोजेनः फसफेटः पटाश - २०ः ४०ः ४० किलो/ प्रति हेक्टेरे ভালोभावे माटिर सङ्गे मिशिये प्रयोग करते हवे।
- ये जमि ते प्रथम बारेर जन्य शणपाट लागानो हवे, सेक्फ्रे बीज निर्दिष्ट राइजेवियाम कालचार दिये लागानोर ३० मिनिट आगे छायाय रेखे मिशिये निते हवे।



क

शणपाट बीज
(क) के-१२ हलुद;
(ख) शैलेश



ख



क

(क) बीज शोधन - कार्बेन्डाजिम २ ग्राम/ प्रति केजि बीजे वा कार्बेन्डाजिम (१२ शतांश) एवं म्यानकोजेव (३३ शतांश) मिश्रण;
(ख) जमि तैरी ओ बीज लागानो।



ख

III. अन्यान्य सहयोगी तन्त्र फसলের कृषि परामर्श

ख) सिसाल

भूमिका: सिसाल (एगोभ सिसालाना) प्राय-बहुवर्षजीवी पाता থেকে तन्त्र উৎপাদনকারী মরুজাতীয় উদ্ভিদ। সিসালের তন্ত্র থেকে তৈরী দড়ি বিভিন্ন ধরনের জলযান (জাহাজ, লঞ্চ, বড় নৌকা ইত্যাদি) বাঁধার কাজে ব্যবহৃত হয়। ব্রাজিল সিসাল তন্ত্র উৎপাদনে ও রপ্তানিতে প্রথম স্থান অধিকার করে, আর চীন সব থেকে বেশি সিসাল আমদানি করে। ভারতের উড়িষ্যা, তেলেঙ্গানা, কর্ণাটক, মহারাষ্ট্র ও পশ্চিমবঙ্গের মরুপ্রায় অঞ্চলে সিসাল চাষ হয়ে থাকে। ভারতে সিসালের মোট জমির পরিমাণ প্রায় ৭৭৭০ হেক্টর, যার মধ্যে ৪৮১৬ হেক্টর সিসাল, মাটি ও জল সংরক্ষণের জন্য ব্যবহৃত হয়। ভারতে সিসালের হেক্টর প্রতি গড় উৎপাদন অনেকটাই কম (৬০০-৮০০ কেজি), তবে সঠিক পদ্ধতি অনুসরণ করে চাষ করতে পারলে হেক্টর প্রতি উৎপাদন অনেকটাই বাড়ানো সম্ভব (২০০০-২৫০০ কেজি)। এই ফসলে জলের প্রয়োজন অনেক কম এবং মধ্যভারতের মালভূমি অঞ্চলের মাটি ও আবহাওয়া (সর্বোচ্চ তাপমাত্রা ৪০-৪৫ ডিগ্রি, বৃষ্টিপাত ৬০-১০০ সেমি) সিসালের জন্য উপযোগী, ও গ্রামীণ অঞ্চলের আর্থিক ও সামাজিক উন্নয়নে বিশেষ সহায়ক হতে পারে। সিসাল চাষ এই অঞ্চলের উপজাতি মানুষদের জীবিকা সরাসরি ও কর্মসংস্থানের মাধ্যমে উন্নয়ন করতে পারে। এছাড়াও সিসাল বৃষ্টির জলের বয়ে যাওয়া অপচয় ৩৫ শতাংশ ও ভূমিক্ষয় ৬২ শতাংশ কম করতে সক্ষম।

মাধ্যমিক নার্সারির পরিচর্যা

- নার্সারির জল নিকাশি ব্যবস্থা করবেন ও নার্সারি আগাছা মুক্ত রাখবেন। সুস্থ্য সাকার পাবার জন্য মেটালাক্সিল ২৫ শতাংশ এবং ম্যানকোজেব ৭২ শতাংশ মিশ্রণ ০.২৫ শতাংশ হারে স্প্রে করে অন্তরবর্তী পরিচর্যা করতে হবে। উদ্ভিদ খাদ্যোপাদান যোগান ও আগাছা দমনের জন্য সিসাল কম্পোস্ট ব্যবহার করা যেতে পারে। যে সব চাষীদের মাধ্যমিক নার্সারি তৈরী বাকি আছে, তারা প্রাথমিক নার্সারিতে বড় করা বুলবিল, মাধ্যমিক নার্সারিতে ৫০-২৫ সেমি দূরত্বে লাগাবেন। বুলবিল লাগানোর আগে পুরানো পাতা ও শিকড় কেটে বাদ দিয়ে ২০ মিনিট ম্যানকোজেব (৬৪ শতাংশ) ও মেটালাক্সিল (৮ শতাংশ) মিশ্রণ ২.৫ গ্রাম প্রতি লিটার জলে মিশিয়ে প্রয়োগ করতে হবে। এক হেক্টর নার্সারিতে ৮০,০০০ সাকার লাগানো যায় তবে শেষ পর্যন্ত ৭২,০০০-৭৬,০০০ সাকার বাঁচে। ধরে নেওয়া হয় যে মাধ্যমিক নার্সারিতে ৫-১০ শতাংশ চারা মরতে পারে।

সিসালের মূল জমি থেকে সাকার সংগ্রহ

- প্রাথমিক ও মাধ্যমিক নার্সারির মাধ্যমে বুলবিল থেকে সাকার তৈরীর পাশাপাশি, আগে থেকে লাগানো সিসালের মূল পুরানো জমি থেকে সাকার সংগ্রহ করা যাবে। সাধারণত একটি সিসাল গাছ থেকে বছরে ২-৩ টি সাকার পাওয়া যায়। বর্ষার শুরুতে এইসব উপযুক্ত সাকার তুলে - সরাসরি নতুন মূল জমিতে লাগানো যাবে। সাকার লাগানোর আগে পুরানো শিকড় ছেঁটে ফেলতে হবে ও শুকিয়ে যাওয়া পাতা ফেলে দিতে হবে। তবে খেয়াল রাখতে হবে যে শিকড় ছেঁটে ফেলার সময়, সাকারের গোড়ার অঞ্চল যেন ক্ষতিগ্রস্ত না হয়।

নতুন সিসাল খেতের পরিচর্যা

- এক-দুই বছর বয়সের সিসাল ক্ষেতে আগাছা নিয়ন্ত্রণের ব্যবস্থা করতে হবে, যাতে সিসালের জল ও খাদ্যের জন্য আগাছার সঙ্গে প্রতিযোগিতা কমে যায়। জেরা রোগের প্রাথমিক লক্ষণ দেখা গেলে - কপার অক্সিক্লোরাইড ৩ গ্রাম প্রতি লিটারে বা ম্যানকোজেব ৬৪ শতাংশ ও মেটালাক্সিল ৮ শতাংশ মিশ্রণ ২.৫ গ্রাম প্রতি লিটার জলে মিশিয়ে প্রয়োগ করতে হবে। সঠিক বৃদ্ধি ও ফলনের জন্য হেক্টর প্রতি ২ টন সিসাল কম্পোস্ট এবং ৬০ঃ৩০ঃ৬০ কিলো এন.পি.কে. সার প্রয়োগ করতে হবে। প্রথম বছর, সিসাল গাছের চারধারে গোল করে সামান্য গর্ত করে সার প্রয়োগ করতে হবে।



পিট তৈরী ও জোড়সারি পদ্ধতিতে সাকার লাগানো



মাধ্যমিক নার্সারিতে অন্তরবর্তী পরিচর্যা



সিসাল তন্ত্র ছাড়ানো ও ধোওয়া



সিসাল তন্ত্র রোদে শুকানো



সিসাল বুলবিল

मूल जमिने सिंसाळ लागानो

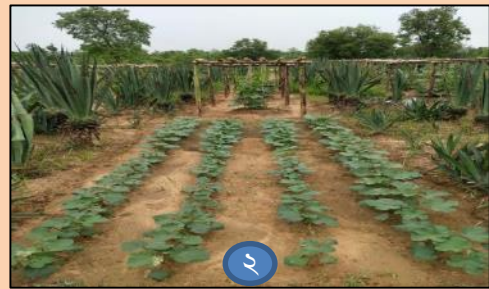
- पुरानो मूलजमिण सिंसाळ थेंके सरासरी तोला सिंसाळ साकार ओ माध्यमिक नार्सारी थेंके पाओया सिंसाळ साकार व्यवहार करे सिंसाळ नतून मूल जमिने चारा लागते पारले भालो हय। माध्यमिक नार्सारीते वडू करा साकार, पुरानो पाता ओ शिकडू छेंटे मूल जमिने लागते हवे। लागानो आगे म्यानकोजेव ७४ शतांश ओ मेटालास्रिल ८ शतांश - २.५ ग्राम प्रति लिटार जले मिशिये २० मिनिटेर जल्य साकारेर शिकडू अक्षल धुये निते हवे। साकार पिटेर गर्तेर माखखाने सूचालो काठिर साहाय्य निये लागते हवे।
- साकारेर आकार (साइज) ७० सेमि लम्बा, २५० ग्राम ओजन ओ ५७ टि पाता विशिष्ट हते हवे। ये सब साकारे रोग-पोकार वा अन्य कोनो प्रकार चापेर (खादयेर वा जलेर अभाव युक्त) लक्षण आछे, सेगुलि बाद दिते हवे।
- सिंसाळ गाछेर द्रुत वृद्धि जल्य हेक्टेर प्रति ५ टन सिंसाळ कम्पोस्ट, ७० केजि नाइट्रोजेन, ७० केजि फसफेट, ७० केजि पाटाश दिते हवे। नाइट्रोजेन सार २ वारे दिते हवे - मोट परिमानेर अर्धेक वर्षा शुरुर आगे, आर वाकि अर्धेक वर्षा चले यावार पर।
- ये सब चाषिा एखनो जमि निर्वाचन करेननि, तादेर जल ना दाँडाय एमन जमि निर्वाचन करते हवे याते कमपक्षे १५ सेमि गभीर माटि थाकते हवे। टालू जमिने सिंसाळ चाषेर फ्लेक्से, पुरो जमि चाष देवार दरकार नेई।
- आगाछा, ढोपवाडू परिस्कार करे १ घन फुटेर पिट ७.५ मिटार — १ मिटार-१मिटार दूरे दूरे वानाते हवे, एते ४,५०० टि पिट हवे येखाने वर्षार शुरुते दुई सारी (डबलू रो) पद्धतिते सिंसाळ लागते हवे। तवे प्रतिकुलपरिस्थितिते ७.० मिटार — १ मिटार-१मिटार दूरे दूरे पिट करे, प्रति हेक्टेरे ५,००० टि साकार लागानो यावे।
- सिंसाळेर जल्य तैरी करा पिट, माटि ओ सिंसाळ कम्पोस्ट दिये भर्ति करते हवे, याते माटि बुरबुरे थाके। अल्ल माटि जमिने हेक्टेर प्रति २.५ टन हारे चुन प्रयोग करते हवे। पिटेर गर्तेर मध्ये एमन भावे माटि पूर्ण करते हवे याते १-२ इन्च डूँचू हये थाके, एते सिंसाळ साकार सहजे दाँडाते पारवे।
- माटि रक्ष्य रोध करते, सिंसाळ साकार जमिण स्वाभाविक चालेर आडाआडि ओ समोमति रेखा वरावर लागते हवे। साकार संग्रहेर ४५ दिनेर मध्ये जमिने साकार लागानो सम्पूर्ण करते हवे। लागानो परे हेक्टेर प्रति कमपक्षे १०० टि अतिरिक्त साकार आलादा करे राखते हवे, याते प्रयोजने कोनो कारणे खालि यये याओया जायगाय आवार सिंसाळ चारा लागिजे जमिने सिंसाळ चारार आदर्श संख्या वजाय राखा यय।
- पुरानो मूलजमिण सिंसाळ थेंके सरासरी तोला सिंसाळ साकारेर परिवर्ते, माध्यमिक नार्सारी थेंके पाओया सिंसाळ साकार व्यवहार करे सिंसाळ नतून मूल जमिने चारा लागते पारले भालो हय।

बुलबुल संग्रह - सिंसाळेर पुष्पदण्ड (याके पोल वला हय) वेर हले, सिंसाळेर पातार वाडू वा वृद्धि बक्ष हये यय। एई प्रत्येकटि पोलै प्राय २००-५०० टि बुलबुल तैरी हय; बुलबुले ४-९ टि छोट छोट पाता थाके। एई बुलबुलगुलि जमि थेंके संग्रह करे प्राथमिक नार्सारीते सिंसाळ रोपन सामग्री हिसावे लागते हवे।

सिंसाळ पाता काटा - क्रमशः वातासेर तापमात्रा वेडे याछे, ताई देरि ना करे अबिलखे सिंसाळ पाता काटा शेष करते हवे, ता ना हले सिंसाळ तन्तुर उँपान कमे यावे। विकेलेर दिके सिंसाळ पाता काटते हवे एवं चेष्टा करते हवे याते एकई दिने पाता थेंके आँश छाडानो हये यय। पाता काटार परे, रोगेर हात थेंके सिंसाळ वाँचाते, कपार अक्लिक्लोराइड २-७ ग्राम/प्रति लिटार जले मिशिये स्प्रे करते हवे।

अतिरिक्त आयेर जल्य सिंसाळेर सजे अस्तुर्वती फसलेर चाष

- दुई सारी सिंसाळेर माखखानेर जमिने अस्तुर्वती फसल हिसावे टेडुष ओ कुमडो चाष करे अतिरिक्त आय हते पारे। एई सब फसले माटि आच्छान देओया ओ जीवनादायी सेच दिते हवे एवं रोग-पोका थेंके सुरक्षार जल्य व्यवस्था करते हवे।



सिंसाळेर जमिने अस्तुर्वती फसल (१) कुमडो, (२) टेडुष

सिसाल भित्तिक सुसंहत खामार व्यवस्था

खरा प्रबन आदिवासी अधुषित अषधले सिसाल भित्तिक सुसंहत खामार व्यवस्था लाडजनकभावे करा येते पारे। एते चाषिर आय वाडवे, कर्मसंहतान हवे ओ दीर्घमेयादि कृषि व्यवस्था पाओया यावे। एही व्यवस्थाय स्थानीय भावे पाओया विभिन्न धरनेर उंसके काजे लागिणे ओ फसलेर अवशिष्टांश व्यवहार करे - यथेष्ठ आयेर संहतान हवे। एही सिसाल भित्तिक खामार व्यवस्थाय फसलेर पाशापाशि विभिन्न प्राणी पालनेर व्यवस्था रेखे एही सुसंहत खामार व्यवस्था अर्थनैतिक भावे सफल ओ सार्थक भावे रूपायित हते पारे।

- १। एही खामारे १०० टि विभिन्न जातेर मुरगि येमन - बनराजा, रेड रुस्टार, कडकनाथ पालन करे ८,०००-१०,००० टाका निट लाड हते पारे।
- २। चाषिरा एही खामार व्यवस्थाय दुई गरू पालन करे प्रति बहर २५,००० टाका अतिरिक्त लाड करते पारेन। सिसाले सडे अश्वरवती फसल हिसावे गोखाद्य चाष, एही गरूर खाओयार जन्य योगान देओया यावे।
- ३। एही व्यवस्थाय १० टि हागल पालन करे प्रति बहर आरो १२,०००-१५,००० टाका अति रिक्त आय हते पारे।
- ४। सिसाले सडे दुई सारिर माखाने ये उँचू जमिर धान (कादा ना करे शुधु चाष दिये) फलानो हवे, तार खड व्यवहार करे माशरूम चाषेर माध्यमे बहरे १२,००० टाका लाड हते पारे।
- ५। सिसाल चाषेर बर्ज ओ माशरूम तैरीर बर्ज व्यवहार करे भार्मिकम्पोस्त तैरी करे व्यवहार करा यावे, एते माटिर स्वास्थ भालो थाकवे ओ बहरे १८,००० टाका अतिरिक्त लाड हवे।

६। सिसाल साधारनत टालु ओ उँचू जमिने लागानो हय - तौ एही अवस्थाय वृष्टिर जल धरे लाडजनकभावे व्यवहार करा यावे। येहेतु एही अषधले एमनितेही अपेष्काकृत कम वृष्टि हय, तौ वृष्टिर जल धरार व्यवस्था करे - ए जल दिये अन्यान्य भावेओ आय वृद्धि हते पारे। एक हेक्टेर सिसाले जमिर मात्र एक दशमांश एही जल धरार जन्य व्यवहृत हवे। एही जल धरार पुकुरेर माप हवे ७० मिटार-७० मिटार-१.८ मिटार, आर १.८ मिटार चओडा पाड हवे। एही पुकुरे जल धरे ये ये भावे व्यवहार करे लाडवान हओया यावे ता हलो -

- सिसाले सडे चाष करा अश्वरवती फसलेर संकटकालीन सेच एही पुकुरेर जल व्यवहार करे देओया यावे। एते एही सब फसलेर उंपादन ओ आय वाडवे।
- एही जल व्यवहार करे सिसाले आँश छाडानोर परे थोया यावे।
- पुकुरेर पाडे विभिन्न उच्चतार फसल येमन - पेपे, कला, नारकेल, सजने एवं अन्यान्य सज्जि चाष करे प्रति बहर १५,०००-२०,००० टाका आय हते पारे।
- मिश्र माछ चाष पद्धतिते कातला, रूई, मृगेल चाष करे प्रति बहर १०,०००-१२,००० टाका आय हते पारे।
- एही जले १०० टि हाँस पालन करे प्रति बहर प्राय ८००० टाका आतिरिक्त आय हते पारे।



उडिष्यार वामडाय सिसाल भित्तिक सुसंहत खामार व्यवस्था

ग) रेमि



- এই সময় চাষিরা রেমির নতুন খেত শুরু করতে পারেন। পুরানো রেমির জমিতে - অসমান ভাবে বেড়ে ওঠা রেমি কাণ্ডগুলি সমান ভাবে কেটে ফেলতে হবে (স্টেজ ব্যাক), তারপর সার প্রয়োগ ও জলসেচ দিতে হবে।
- হাজারিকা (আর ১৪১১) জাতের ভালো রেমি রাইজোম বা চারা ব্যবহার করতে হবে। এই রাইজোম বীজশোধনের ছত্রাকনাশক দিয়ে ভালোভাবে শোধন করে নিতে হবে। সারি করে লাগাতে হবে; রাইজোমের পরিমাণ হবে ৮-৯ কুইন্টাল/ প্রতি হেক্টরে বা প্রতি হেক্টরে ৫৫-৬০ হাজার চারা বা কাণ্ড-কাটা লাগবে।
- তিন-চার বার আড়াআড়ি ভাবে চাষ দিয়ে ভালোভাবে জমি তৈরী করতে হবে। জমিতে ৪-৫ সেমি গভীর লম্বা নালি করতে হবে; এই নালিতে সারি করে ১০-১২ সেমি সাইজের রাইজোম ৩০-৪০ সেমি দূরে দূরে লাগাতে হবে। রেমির সঠিক বেড়ে ওঠার জন্য সারি থেকে সারির দূরত্ব হবে ৭৫-১০০ সেমি।
- দুই সারি রেমির মাঝখানের জায়গায় স্থানীয় চাষিদের পছন্দ অনুযায়ী অল্পদিনে ফলন দেয় এমন ফসল চাষ করা যেতে পারে। তবে অনেক ক্ষেত্রে রেমির সঙ্গে আনারস, পেঁপে ইত্যাদিও চাষ করা যায়।
- রেমি ফসলের সঠিক বৃদ্ধির জন্য ও মাটির স্বাস্থ্য বজায় রাখার জন্য অর্জৈব সারের সঙ্গে জৈব সার (খামার সার বা রেমি কম্পোস্ট) প্রয়োগ করার সুপারিশ করা হয়। লাগানোর ৪০-৫০ দিন পর নাইট্রোজেনঃ ফসফেটঃ পটাশ ২০ঃ১০ঃ১০ কিলো/ প্রতি হেক্টরে প্রয়োগ করার সুপারিশ করা হয়। এর পর, প্রত্যেক বার রেমি কাটার পর, হেক্টর প্রতি ৩০ঃ১৫ঃ১৫ কিলো, এনঃপিঃকে সার দিতে হবে। রেমি লাগানোর ১৫-২০ দিন আগে হেক্টর প্রতি ১০-১২ টন হারে খামার সার প্রয়োগ করতে পারলে ভালো হয়।
- কীট-পতঙ্গ ও রোগের আক্রমণের মাত্রা বুঝে ক্লোরপাইরিফস ০.০৪ শতাংশ এবং ম্যানকোজেব ২.৫ গ্রাম/ প্রতি লিটার জলে মিশিয়ে স্প্রে করার পরামর্শ দেওয়া হয়।
- সময়মতো রেমি কাটা অতি গুরুত্বপূর্ণ, আগে লাগানো ফসলের জন্য, প্রতি ৪৫-৬০ দিন পর পর কাটতে হবে। রেমির বয়স বেশি হয়ে গেলে, আঁশের গুণমান খারাপ হয়ে যায় ও দাম কম পাওয়া যায়।
- যে সব আগাছানাশক সব আগাছা মারতে পারে (বাছাই ক্ষমতাহীন) ও মাটিতে বিশেষ দূষণের কারণ হয় না, তা দিয়ে আগাছা দমন করতে হবে।
- সরুপাতা ঘাসজাতীয় আগাছা নিয়ন্ত্রণের জন্য, রেমি কাটার ২০ দিন পর কুইজালোফপ্ ইথাইল (৫ ইসি) প্রতি হেক্টরে ৪০ গ্রাম প্রয়োগ করার সুপারিশ করা হয়।
- রেমি জল জমা সহ্য করতে পারে না। তাই জমি তৈরীর সময় জল নিকাশী নালা তৈরী করে রাখতে হবে এবং বেশি বৃষ্টির সময় অতিরিক্ত জল বের করে দিতে হবে।



নতুন রেমি লাগানোর জন্য - রাইজোম ও চারা

রেমি রাইজোম লাগানো

রেমি ফসল কাটা



রেমি কাণ্ড কাটার পরে পাতা ছাড়ানো

রেমির আঁশ ছাড়ানো

রেমি তন্তু (আঠা সহ) ছাড়ানোর পর রোদে শুকানো

(घ) फ्लाक्क
(तन्त्र मसिना)



भूमिका: फ्लाक्क वा तन्त्र मसिनार (लिनारु उस्ट्याटिसिमम एल.) आँश हालका हलदे रण्येर, १० शतांश सेलुलोज समृद्ध, ताप रोधी, अ्यालार्जि ह्य ना, शरीरे स्थिर तडिङ् उंपादन करे ना ओ ब्याकटिरियार वृद्धिते बाधा देय। एहि तन्त्र चाषेर जन्य ५०-१०० डिग्रि फारेनहाईट तापमात्रा, बेशि वृष्टि ओ तुयारपात ना हओया दोयास माटि अषण्ल निर्वाचित करा प्रयोजन। एमन आदर्श आवहाओया ओ माटि - हिमालय समिहित अषण्लेर जम्मु ओ काश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उतुराखन्ड, उतुर प्रदेशेर उतुराषण्ल, पश्चिमबङ्गेर उतुराषण्ल ओ पूर्व-भारतेर बेश कयेकटि राज्जे पाओया यय। भारतेर एहि सब अषण्ले फ्लाक्क चाषेर आदर्श माटि ओ जलवायु थाका स्वहेओ, फ्लाक्क चाष बेशेय प्रसार लात करेनि। एर प्रधान कारणणुलि हल - निर्दिष्ट अषण्लेर जन्य उच्च-फलनशील जात ओ विज्ञानसम्मत उंपादन प्रयुक्तिर अभाव।

- एहि फसल १२०-१३० दिन बयसे पेके यय एवंग बीज पाकार आगेहि तन्त्र फसलेर जन्य काटा ह्य। यखन जमिर दुई-तृतीयांश गाह हलदेटे ह्य एवंग गाह्चेर प्राय दुई-तृतीयांश पाता वारे यय तखन एहि फसल काटार उपयुक्त समय।
- हात दिये टेने टेने माटि थेके तुले एहि फसल संग्रह करा ह्य। तोलार परे १५-२० सेमि साईजेर छोट छोट बाण्डिल करा ह्य ओ पचाते देओया ह्य। आगे फसल काटले फलन कम हवे तवे आँशेर मान भाले ह्य; आर काटते देरि हले, फलन बेशि ह्य, किन्तु तन्त्र मान खाराप ह्य।
- पुकुरेर जले एहि बाण्डिलगुलि डुबिये राखा ह्य याते जल शोषण करते पारे ओ पचन प्रक्रिया हते पारे। बाण्डिलगुलि पाशापाशि रेखे २०-२५ सेमि जलेर गभीरे बाँश वा काठ दिये बेँधे डुबिये राखा ह्य।
- पचन प्रक्रिया सम्पूर्ण हते तिन दिन वा १२ घन्टा समय लागे। तार पर काठ थेके तन्त्र छाडाने ह्य।
- पचनेर पर काठेर उपरेर नरम अंश किछुटा केटे फेला ह्य, याते गाह्चेर बीज अंशटा आलादा ह्ये यय। तार परे फ्लाक्क काठगुलि स्काचिं मेशिनेर माध्यमे आँश छाडाने ह्य। तवे एहि काज हात दियेओ मुणुरेर मते काठेर अंश दिये पिटिये करा ह्य। एते काठेर शक्त काठल अंश भेडे टुकरो टुकरो ह्ये यय ओ आँश बेरिये आसे।
- क्रिन्जाफेर तैरी फ्लाक्क तन्त्र निष्काषण यन्त्र व्यवहार करे आँश पाओया यय। एहि मेशिन स्वदेशी पद्धतिते तैरी एवंग एर मध्ये फ्लाक्केर काठगुलि टुकिये दिले, काठेर काठल अंश भेडे यय ओ आँश बेरिये आसे। तार पर एहि छाडाने तन्त्र चिरनि दिये आचडिये परिष्कार करा ह्य, याते खुब छोट आँश आलादा ह्ये यय। परे लम्बा तन्त्रगुलि एकत्रित करे बाण्डिल बाँधा ह्य।



फसल काटार अवस्थय



फ्लाक्क काटा



पचानोर पद्धति



फ्लाक्क तन्त्र

पाट ओ मेस्ता चाषे जमिर स्वाभाविक स्थाने जलाधार भित्तिक परिवेशवाक्खव स्वनिर्भर खामार व्यवस्था

- वृष्टिर अनियमित वितरण, पाट पाचानोर जनु उपयुक्त सर्वसाधारणेर पुकुरेर अभाव, माथाप्रति कम जलेर योगान, चाषेर खरच ओ कुषि श्रमिकेर मजुरि वृद्धि, पुकुर - नदी - नाला शुक्रिये याओया इत्यादि विवेचना करे देखा याय, चाषिरा पाट ओ मेस्ता पाचानोते असुविधार सम्बुधीन ह्छेहन। कम जले एवं सर्वसाधारणेर पुकुरेर मयला जले क्रमागत पाट पाचानोर फले, पाटेर आंशेर मान खाराप ह्छे एवं आन्तर्जातिक बाजारे प्रतियोगिताय टिके थाकते पारहे ना।
- एहि सब समस्यार समाधानेर जनु - वर्षा शुरुर आगेहि चाषिरा जमिर स्वाभाविक स्थाने जलाधार भित्तिक खामार व्यवस्था ग्रहन करे पाट ओ मेस्ता चाषे लाभान हते पारैन। साधारणत पाट चाषेर अध्जले वृष्टिपातेर परिमान ভালो (वार्षिक १२००-२००० मिलिमिटर) एवं एर प्राय ७०-८० शतांश वृष्टिर जल वये चले गिये नष्ट हय, यार किछुटा अंश जमिर स्वाभाविक निचु दिके पुकुर तैरी करे धरे राखा येते पारे।

पुकुरेर माप एवं एक एकर जमिर पाट पाचानोर जनु पचन पद्धति

- पुकुरटिर आकार हवे ८० फुट लम्बा, ७० फुट चओडा ओ ५ फुट गभीर। एक एकर जमिर पाट वा मेस्ता एहि पुकुरे दु'वार जग देओया यावे। पुकुरेर पाड यथेष्ट चओडा (१.५-१.८ मिटर) हवे, याते पेँपे, कला ओ सज्जि लागानो याय। एहि खामार प्रणालि/ व्यवस्थाय पुकुर ओ तार पाडु निये मोट आयतन १८० वर्ग मिटर हवे। चाषिरा यदि एहि खामार प्रनालिते आरो बेशि परिमाने जमि व्यवहारे इच्छुक, तहले पुकुरेर माप ५० फुट-७० फुट-५ फुट हते पारे।
- पुकुरेर भितरेर दिके १५०-३०० माइक्रनेर कुषिते व्यवहार योग्य पलिथिन दिये टेके दिते हवे याते पुकुरेर जल चुइये वा निचे चले गिये नष्ट ना हय।
- एकसङ्गे तिनटि जाक तैरी करते हवे एवं एक एकटि जाके तिटि करे सुत्र थाकवे। पुकुरेर तलार माटि थेके जाक २०-३० सेन्टिमिटर उपरे थाकवे एवं जाकेर उपर २०-३० सेन्टिमिटर जल थाकवे।

जमिटेहि तैरी पचन पुकुरेर सुविधा

- प्रचलित पद्धतिते पाचानोर फ्फेरे पाट केटे पाचानोर पुकुरे वये निये याओयार खरच एकर प्रति ८०००-५००० टाका एहि पद्धतिते साश्रय हवे।
- प्रचलित पद्धतिते १८-२१ दिने पाट पचे; किन्तु एहि नतुन पद्धतिते एकरे १८ केजि क्रुइज्याफ सोना व्यवहार करे १२-१५ दिने पाट पचे यावे। द्वितीय वार पाचानोर समय क्रुइज्याफ सोना अर्धेक लागवे एवं एते ८०० टाका खरच बाँचवे।
- पाट पाचानोर जनु वृष्टिर नतुन धरा जल व्यवहार करले वा ए समय वृष्टि हले - धीरे वये चला जल पाओया यावे एवं आंशेर गुनमान कमपक्के १-२ ग्रेड उन्नत हवे।

तैरी करा पुकुरे पाट ओ मेस्ता पाचानो छाडाओ वृष्टिर धरा जल आरो विभिन्न उपाये व्यवहार करा यावे -

- १। विभिन्न उच्चतार वागिचा फसल व्यवहार माध्यमे पेँपे, कला, अन्यान्य सज्जि चाष करे प्रति ट्याक्के प्राय १०,०००-१२,००० टाका लाभ हवे।
 - २। वायुते श्वास निते पारे एमन माछ येमन - तिलापिया, मागुर, शिषि माछ चाष करे ५०-६० केजि माछ पाओया येते पारे।
 - ३। एहि व्यवस्थाय मोमाछि पालन करा यावे (प्रति ट्याक्के लाभ ९,००० टाका) एवं एते बीज उपादने परागमिलने सुविधा हवे।
 - ४। माशरुम चाष, भार्मिकम्पेपेण्ट तैरी करे आय हते पारे।
 - ५। एहि पुकुरे प्राय ५० टि हाँस पालन करे ५,००० टाका अतिरिक्त आय हते पारे।
 - ६। पाट पाचानो जल, पाटेर सङ्गे फसलचक्र लागानो सज्जि ओ अन्यान्य फसलेर सेचेर जनु व्यवहार करा यावे एवं प्रति एकरे ८,००० टाका अतिरिक्त लाभ हते पारे।
- सुतरां जमिटे एहि पद्धतिते पुकुर वानिये, मात्र १,०००-१,२०० टाकार पाटेर श्कति करे, चाषिरा अनेक धरनेर फसल फलिये, प्राणी-मत्स-मोमाछि पालन करे प्राय ३०,००० टाका आय करते पारैन। एछाडाओ एहि पद्धतिते चाषेर फले बहनेर खरच प्राय ८,०००-५,००० टाका बाँचवे। सेहि सङ्गे एहि प्रयुक्ति, चाषवासे चरम आवहाओयार - येमन खरा, बन्या, घूर्णिबाड़ इत्यादिर श्कतिकर प्रभाव कम करते सक्कम।

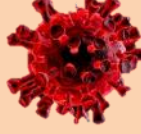
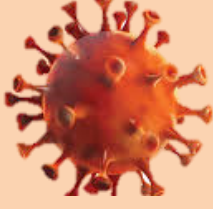


पाट ओ मेस्ता चाषे जमिर स्वाभाविक स्थाने जलाधार भित्तिक परिवेशवाक्त्रव स्निर्भर खामार व्यवस्था

- ❖ पाट/ मेस्ता पचानो
- ❖ माछ चाष
- ❖ पाडे सज्जि चाष
- ❖ पुकुरेर धारे भार्मिकम्पोस्त तैरी

- ❖ हांस पालन
- ❖ मोमाछि पालन
- ❖ फल बागिचा (पेँपे ओ कला)

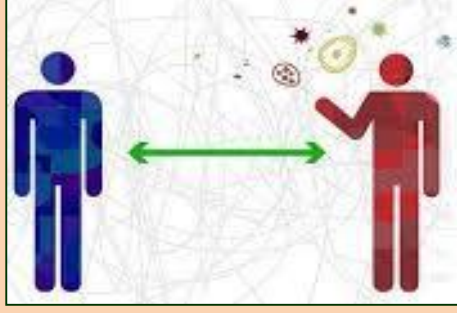
IV. कोरोना (COVID-19) भाईरसैर संकुरमण छडुईये पडा ठैकाते ये ये निरापत्रामूलक ओ प्रतिरोध ब्यबस्था ग्रहन करते हबे एवं मेने चलते हबे



- १। कुषकदेर चाषबासेर काजेर समय निरापत्रा ब्यबस्था हिसाबे एक जनेर थेके आरेक जनेर सामाजिक दुरतव बजाय राखते हबे। चाषिआ जमी चाष, बीज बपन, आगाछा नियत्रण, जलसेच देओया इत्यादि काजेर समय डाङ्गारि परामर्श मतो मुखोस (मास्क) परबेन, आर माबे माबे सावान-जल दिये हात धोबेन।
- २। यखन एकई कुषि यन्त्रपाति येमन - लाङ्गल, ट्राङ्कटर, पाओयार टिलार, बीज बपन यन्त्र, निडानि यन्त्र, जलसेचेर पाप्प अनेके मिले पर पर भागाभागी करे ब्यबहार करबेन, तखन खेयाल राखते हबे एई यन्त्रपातिगुलि येन सठिकभाबे परिष्कार करा हय। कुषि यन्त्रपातिर ये ये अंश बार बार हात दिये स्पर्श करते हय, सेई अंशटा सावान जल दिये धुये निते हबे।
- ३। चाषेर काजेर फाँके अबसरेर समय, खाबार खाओयार समय, बीज शोषनेर समय एवं सार नामानो वा तोलार समय - पर्याप्त सामाजिक दुरतव (कम पक्षे ३-४ फुट) बजाय राखते हबे।
- ४। यतोटा संभव, कुषि काजे परिचित लोकेदेरई काजे लागान। ভালोभाबे खौज खबर नियेई सेई मजुर काजे लागते हबे, याते कोनो कोरोना भाईरस बाहक कुषिकाजे आपनार अण्गले चले आसते ना पारे।
- ५। बीज ओ सार परिचित दोकान थेके किनबेन एवं दोकान थेके फिरे आसार परेई सावान जल दिये ভালोभाबे हात धुये नेबेन। बाजारे बीज, सार इत्यादि किनते याबार समय अवश्यई मुखोस (मास्क) परबेन।
- ६। कोभिड-१९ भाईरस रोग संक्रांत जरुपरि स्वास्थ परिसेवा बिषये तथ्य जानार जन्य आपनार स्मार्ट मोबाईले 'आरोग्य सेतु' नामेर एप्लिकेशन सफ्टओयार ब्यबहार करुन।



V. पाट कलेर (जूट मिल) कर्मचारिदर जन्य परामर्श



- पाट कल (जूट मिल) चालू राखार जन्य, पाट कलेर सीमानार मध्ये थाका कर्मचारिदर दिये छोटो छोटो ब्याचे, वारे वारे शिफ्ट करे काज चलाते हवे।
- पाट कलेर मध्ये आनेक जायगाय कलेर (जल) व्यवस्था करते हवे, याते कर्मचारिरी मावे मावे हात धुये निते पारैन। काज चलाकालीन अवस्थाय, कर्मचारिरी धूमपान करबेन ना।
- मिलेर शौचागार गुलि वार वार परिस्रार करते हवे, याते कर्मचारिरी रोगेर आक्रमणे ना पडेन।
- कर्मचारिदर, ग्लाउस, जूतो, मुख टाकार व्यवस्था एवंग अन्यान्य सुरक्षार जन्य परामर्श दिते हवे।
- मिलेर मध्येई, काजेर जायगा वार वार बदल करा येते पारे, याते कर्मचारिदर मध्ये पारामर्श मतो सामाजिक दूरत वजाय थाके।
- ये सम कर्मचारिदर यन्त्रपातिर (मेशिनेर) अनेर स्थाने वार वार हात दिते हय, तादर जन्य आलादा भावे हात धोयार वा स्यानिटाईज करार व्यवस्था राखते हवे। एछाडांओ मेशिनेर ओई जायगागुलो वार वार सावान जल दिये परिस्रार करते हवे।
- वयस्क कर्मचारिदर अपेक्षकृत फाँका वा भिड कम जायगाय काज दिते हवे, याते तादर भाईरासेर संक्रमण ना हय।
- मिलेर कर्मचारिरी टिफिनेर समय वा अवसरेर समय भिड करे एक जायगाय आसबेन ना एवंग ७-८ फुट दूरत वजाय रेखेई हात धोबेन।
- यदि कोनो मिल कर्मचारिरी ई धरनेर शारीरिक समस्या देखा यय, तवे तिनि अबिलखे मिलेर डाक्टर वा मिल मालिकेर सडे योगायोग करबेन।



आपनादर सबाईके सुस्थ्य ओ निरापद थाकार जन्य शुभेच्छा जानाई

धारणा ओ प्रकाशनाः

डः गौराङ्ग कर,

निर्देशक,

भा.कृ.अ.प. - क्रिज्याफ,

नीलगण्ज, ब्यारकपुर,

कोलकाता-९००१२१, पश्चिमबङ्ग

Acknowledgement: The Institute acknowledges the contribution of Chairman and Members of the Committee of Agro-advisory Services of ICAR-CRIJAF; Heads/ Incharges of Crop Production, Crop Improvement and Crop Protection division, In-charges of AINPNF and Extension section of ICAR-CRIJAF and other contributors of their division/section; In-charges of Regional Research Stations of ICAR-CRIJAF and their team; In-charge AKMU of ICAR-CRIJAF and his team for preparing this Agro-advisory.

[Issue No: 07/2022 (9-23 April, 2022)]